

डॉ. टिम गोम्बिस , गलातियों, सत्र 8, गलातियों 6:1-18

© 2024 टिम गोम्बिस और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टिम गोम्बिस द्वारा गलातियों की पुस्तक पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 8 है, गलातियों 6:1-18।

खैर, यह गलातियों 6 है। यह गलातियों पर अंतिम व्याख्यान है।

हम पत्र के अंत में आ रहे हैं, जहाँ पौलुस अपने सभी धार्मिक तर्क, व्यक्तिगत उपदेश, धार्मिक तर्क के अंतर्संबंध और व्यक्तिगत उपदेशों के बाद कुछ समापन उपदेश देता है। लेकिन हम यहाँ समापन पर आ रहे हैं, जहाँ पौलुस फिर से अपने श्रोताओं की ओर मुड़ता है, कहता है, हे भाइयो, यदि कोई व्यक्ति किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता की भावना से ऐसे व्यक्ति को सुधारो, और अपने आप को देखो, कहीं तुम भी परीक्षा में न पड़ जाओ। तो एक बार फिर, इस तरह के उपदेशों को भी, हम प्रेरित के रूप में पौलुस के बीच चल रही बयानबाजी की स्थिति के संदर्भ में पढ़ रहे हैं, जो गलातिया में चल रही स्थिति को ठीक करने की कोशिश कर रहा है।

तो, यह इसी बात को ध्यान में रखते हुए है। अब, चूँकि यह बहुत ही व्यावहारिक रूप से उन्मुख है, इसलिए इसे किसी भी स्थिति में लागू करना आसान है। अगर हम इसे किसी भी स्थिति में लागू करते हैं, तो यह अच्छी बात है।

लेकिन इस आयत को इसकी मूल संचारात्मक स्थिति में पढ़ें। पौलुस आप लोगों से अपील कर रहा है जो आध्यात्मिक हैं। यह ऐसा कोई भेद नहीं है जिसे हम आम मसीहियों और फिर अति आध्यात्मिक कुलीनों के बीच मान सकते हैं।

यह वह व्यक्ति है जो आत्मा के इस क्षेत्र में रहता है, जो कोई भी उस क्षेत्र में है, उस स्थिति में कूदो और उस तरह के व्यक्ति को बहाल करो, सावधान रहो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो। तो, जो कोई भी आत्मा में है वह उस उपदेश का विषय है। यदि आप यहाँ अपराध के बारे में सोचते हैं, तो पौलुस के मन में सबसे पहले वह व्यक्ति है जिसे बहाल करने की आवश्यकता है।

पहली बात जो हमें सोचनी चाहिए, वह है कोई भी व्यक्ति, उस पिछले आरेख के बारे में सोचते हुए, कोई भी व्यक्ति जो इस शिक्षा में फंस गया है कि उन्हें उस विशिष्ट समूह में वापस खींचे जाने की आवश्यकता है और व्यापक श्रेणी, उस बहु-जातीय, बहु-राष्ट्रीय लोगों के साथ संगति नहीं करनी चाहिए, जो उन्हें उन लोगों के साथ रखेगा जिन्हें पहले पापी माना जाता था। तो, वास्तव में, पॉल किसी भी व्यक्ति के बारे में सोच रहा है जो शिक्षा में फंस गया है। आप जो आत्मा के हैं, उस व्यक्ति को पुनर्स्थापित करें, फिर से, उन्हें लक्षित न करें या उनके पीछे न जाएं या उन्हें एक कोने में वापस न करें, बल्कि ऐसे व्यक्ति को नम्रता की भावना में पुनर्स्थापित करें, ताकि आप परीक्षा में न पड़ें।

यहाँ प्रलोभन, शिक्षा में वापस आने का प्रलोभन है, बल्कि प्रलोभन किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने का है जिसे आप विरोध के रूप में सोच सकते हैं, क्रोध से जुड़ने का प्रलोभन या किसी तरह के बल या दबाव से जुड़ने का प्रलोभन। फिर से, पॉल उन सभी व्यवहारों, बल, दबाव, प्रभुत्व और निंदा को अन्य लोगों के प्रति मुद्रा के रूप में देखता है जो केवल बुरे परिणाम ही देगा। यह एक तरह का पॉलिन नियम है।

आप वर्तमान बुरे युग के साधनों से नए सृजन के परिणाम नहीं बना सकते। यही प्रलोभन है, जो वास्तव में लोगों को उनकी निंदा करके या उन्हें बहला-फुसलाकर या मजबूर करके नए सृजन व्यवहारों में धकेलना है। लेकिन पौलुस के मन में कोमल अपील, कोमल अपील है।

वैसे, कोमल अपील को शक्ति की कमी न समझें। आप मसीह के शरीर में कोमलता और पुनर्स्थापना और क्रूस के आकार के अस्तित्व और समावेशिता के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध हो सकते हैं, उचित समावेशिता, और साहस रख सकते हैं, एक साहसी साहस जो कि गैर-परक्राम्य है, कि वह वास्तविकता गैर-परक्राम्य है। और अगर ऐसा है कि कोई भी वहाँ भ्रष्ट करने वाला तत्व बनने जा रहा है, तो चर्च के नेतृत्व में लोगों को साहसपूर्वक, मधुरता से, धीरे से, लेकिन लगातार मांग करनी चाहिए कि जो लोग उस वास्तविकता में शामिल होते हैं वे क्रूस के आधार पर ऐसा करें, दूसरों को बाहर किए बिना, बिना किसी ऐसे तरीके से व्यवहार किए जो उचित ईसाई पहचान के संदर्भ में अनुचित है।

इसलिए, सिर्फ इसलिए कि हम क्रूस के आकार में हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि हमारे पास किसी भी तरह की नई रचना की रीढ़ नहीं है। लेकिन जो बात हमें सहारा देती है, वह यह तथ्य है कि हम भी मसीह द्वारा दावा किए गए हैं। ऐसा नहीं है कि जो बात हमें सहारा देती है, वह यह है कि, किसी समय, हम अपना आपा खो देंगे।

यह ताकत नहीं है। यह नई सृष्टि की वास्तविकताओं में विश्वास की कमी है। इसलिए पौलुस गलातिया के लोगों से आह्वान करता है कि वे बिना किसी संघर्ष में उलझे, बिना किसी तरह के प्रतिशोधात्मक तरीके में उलझे ऐसे व्यक्ति को पुनर्स्थापित करें।

पद 2 में, वह इसी भावना को जारी रखते हुए, उन्हें एक-दूसरे का बोझ उठाने के लिए प्रोत्साहित करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि, एक-दूसरे के साथ धैर्य रखें, एक-दूसरे की सेवा में खुद को लगाएँ और इस तरह मसीह के नियम को पूरा करें। अब, यह शब्द, मसीह का नियम, मूसा के नियम के विरुद्ध एक अलग नियम नहीं है।

ऐसा नहीं है कि मूसा के कानून का अब विश्वासियों पर कोई अधिकार नहीं है, लेकिन हम मसीह के कानून के अधीन हैं। पॉल अभी भी टोरा के बारे में बात कर रहे हैं। हालाँकि, कानून को मसीह के नज़रिए से पढ़ा जाता है।

इसलिए, गैलेशियन गैर-यहूदी ईसाइयों के लिए व्यवस्था शास्त्र ही है। बात बस इतनी है कि वे व्यवस्था से इस हद तक जुड़े हुए हैं कि मसीह ने उन पर दावा किया है, और वे इसे शास्त्र मानते

हैं, और परमेश्वर के चरित्र को जानने के लिए इसका सहारा लेते हैं। लेकिन वे व्यवस्था से उस तरह से जुड़े हुए नहीं हैं जिस तरह से यहूदी व्यवस्था से जुड़े हुए हैं।

उनके लिए, यह उनका राष्ट्रीय चार्टर है। यह उनके आहार, उनके कैलेंडर और उनके समग्र जीवन शैली को निर्धारित करता है। यरूशलेम के मिशनरी, बेशक, गैर-यहूदी ईसाइयों को बता रहे हैं कि मूसा का कानून उनके लिए भी राष्ट्रीय चार्टर होना चाहिए, लेकिन यह मूसा के कानून की गलत व्याख्या और गलत तरीके से माना गया है।

वे व्यवस्था से संबंधित हैं क्योंकि यह शास्त्र है, व्यवस्था वह स्थान है जहाँ वे एकमात्र सच्चे ईश्वर से मिलते हैं जो मसीह के चरित्र का रहस्योद्घाटन भी है जैसा कि घटित होता है। पद 4 से 4 और 5 में पौलुस के उपदेशों के साथ आगे बढ़ते हुए, ऐसा लगता है कि पद 5 में पौलुस पद 2 में कही गई बातों से थोड़ा विपरीत कुछ कहता है। वह पद 2 में कहता है, एक दूसरे का बोझ उठाओ और इस तरह मसीह की व्यवस्था को पूरा करो। लेकिन पद 5 में, वह कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना बोझ स्वयं उठाएगा।

खैर, वहाँ वास्तव में क्या हो रहा है? पद 4 में, पौलुस अपने श्रोताओं को बताता है कि उन्हें प्रत्येक को अपने स्वयं के कार्य की जाँच करने की आवश्यकता है। अर्थात्, प्रत्येक व्यक्ति को बहुत सावधान और आत्म-परीक्षण करने की आवश्यकता है कि वे सामुदायिक जीवन में कैसे भाग ले रहे हैं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे समुदाय में फलदायी रूप से भाग ले रहे हैं। तभी उन्हें इस बात का भरोसा होगा कि जब मसीह का दिन आएगा, तो वे जान जाएँगे, या मुझे कहना चाहिए कि तब यह प्रकट होगा, कि वे वास्तव में नए सृजन लोगों का हिस्सा हैं।

पद 5 में उनका यही मतलब है कि हर एक को अपना बोझ खुद उठाना होगा। समुदाय में हर व्यक्ति को अंतिम दिन का सामना करना होगा और इस बात का मूल्यांकन करना होगा कि क्या वे वास्तव में नई सृष्टि का हिस्सा हैं या वे वर्तमान बुरे युग का एक घटक हिस्सा हैं। इस वजह से, गलातियों के समुदाय में हर व्यक्ति को यह सुनिश्चित करने के लिए लगातार आत्म-परीक्षण करने की ज़रूरत है कि उनका व्यवहार आत्मा के फल से चिह्नित है न कि शरीर के कामों से।

तो इस तरह आप उन दो विरोधाभासी कथनों को समेट सकते हैं कि गलातियों को एक दूसरे का बोझ उठाने की ज़रूरत है, साथ ही, हर कोई अपना बोझ खुद उठाएगा। उन्हें जो व्यवहार अपनाना चाहिए, वह है आत्म-समर्पण करने वाला प्रेम और एक-दूसरे की देखभाल करना, इस ज्ञान के साथ कि अंत में उन्हें न्याय का सामना करना पड़ेगा। पद 7 इन उपदेशों का समर्थन करता है जब पॉल कहता है, धोखा मत खाओ।

परमेश्वर का मज़ाक नहीं उड़ाया जा सकता। यह सब परमेश्वर की सर्वोच्च निगरानी में होता है। वह गैलेशियन समुदाय में होने वाली हर चीज़ को देखता है।

परमेश्वर का मज़ाक नहीं उड़ाया जा सकता। क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। गलातियों के समुदाय में प्रत्येक व्यक्ति को समुदाय में उसके व्यवहार के आधार पर एक अंतिम पुरस्कार या न्याय मिलेगा।

इसलिए, वह श्लोक 8 में आगे कहता है, क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर से भ्रष्टता की फसल काटेगा। जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा से अनन्त जीवन की फसल काटेगा। इसलिए, जो व्यक्ति व्यवहार बोता है, इस क्षेत्र में निवेश करता है, वह उसका प्रतिफल प्राप्त करने जा रहा है।

एक व्यक्ति जो आत्मा के लिए बोता है, समुदाय में निवेश करता है, और कॉर्पोरेट समुदाय के उत्कर्ष के लिए खुद को समर्पित करता है; वे उस इनाम को प्राप्त करने जा रहे हैं जो ईश्वर का राज्य है। ईश्वर संप्रभुतापूर्वक इसकी देखरेख कर रहा है। मुझे लगता है कि इस तरह की बातें थोड़ी परेशान करने वाली हैं, खासकर एक बार बचाए गए-हमेशा बचाए गए लोगों के लिए जो मेरे धर्म परिवर्तन की पिछली घटना से पूरी तरह से उद्धार के बारे में सोचते हैं।

ईसाइयों को याद दिलाने की ज़रूरत है कि अगर मैं कभी ईसाई यात्रा शुरू करता हूँ, तो प्रभु की स्तुति करता हूँ, लेकिन पॉल और नए नियम के लेखकों और वास्तव में सभी यात्रा करने वाले मिशनरियों और कृत्यों के लिए महत्वपूर्ण दिन, उनके लिए महत्वपूर्ण दिन अंत है, अंतिम दिन। अगर मैंने कभी शुरुआत की है, तो यह बहुत अच्छा है, लेकिन जो मायने रखता है वह जारी रखना और खत्म करना है। इसलिए उस वास्तविकता के आधार पर, पॉल यह कहता है, मूल रूप से, जहाँ भी आप अपने जीवन को व्यक्तिगत रूप से जोड़ते हैं, लेकिन जहाँ भी कोई समुदाय खुद को समर्पित करता है, वे उस अंत को साझा करने जा रहे हैं।

यह पॉलिन की वास्तविकता है। और जैसा कि मैंने कहा, क्योंकि कुछ ईसाई समूहों ने उद्धार की तस्वीर के एक हिस्से पर ही ध्यान केंद्रित किया है, यानी धर्म परिवर्तन का क्षण, और वहाँ से मुक्ति का धर्मशास्त्र बनाया है, वे उद्धार की तस्वीर के अन्य पहलुओं को भूल गए हैं, दृढ़ता की आवश्यकता और यह तथ्य कि एक निर्णय होगा जो मूल्यांकन करेगा कि हमारे जीवन ने कहाँ निवेश किया था, हमारे समुदाय ने कहाँ निवेश किया था। इसलिए, ईश्वर का मज़ाक नहीं उड़ाया जाता है, और यह समुदायों के लिए एक संदेश है कि वे यह देखें कि वे अपने सामुदायिक जीवन का गठन करने के लिए निरंतर आधार पर निर्णय पारित कर रहे हैं।

क्या यह नई सृष्टि-उन्मुख है? क्या यह वर्तमान बुराई युग-उन्मुख है? और यदि यह एक या दूसरा है, तो क्या बदलने की आवश्यकता है या क्या बनाए रखने की आवश्यकता है? ध्यान दें कि हमें इनमें से एक नोट पद 11 में मिलता है, जो हमें पॉल के एक या दो अन्य पत्रों में मिलता है, जहाँ वह संकेत देता है कि उसने वास्तव में यह पत्र नहीं लिखा है। पॉल के पत्र लगभग निश्चित रूप से लिखवाए गए थे, लेकिन वह अध्याय 6 के पद 11 में समापन नोटों में से एक में कहता है, देखो मैं तुम्हें अपने हाथ से कितने बड़े अक्षरों में लिख रहा हूँ। तो उसने संभवतः यह पत्र किसी और को लिखवाया था।

अक्सर, हमें पत्र के अंत में यह संकेत मिलता है कि वास्तव में पत्र किसने लिखा था। यानी, वह कौन था जो पॉल के लिखे हुए संदेश को लिख रहा था? हम नहीं जानते कि वह कौन था, लेकिन हमें अक्सर इन पत्रों के अंत में एक नोट मिलता है जिस पर पॉल हस्ताक्षर करता है, या वह अपना संदेश लिखता है।

और यह स्पष्ट है कि वह यह इसलिए लिखते हैं क्योंकि वह कोई सामान्य लेखक नहीं हैं। आधुनिक दुनिया में लोगों के लिए इसे पहचान पाना थोड़ा असामान्य है, लेकिन प्राचीन दुनिया में साक्षरता दर बेहद कम है। हर किसी के लिए पढ़ना ज़रूरी नहीं था, और इसलिए अगर आप पढ़ और लिख सकते थे, तो आपको जाना जाता था।

यदि आप लिख सकते थे, तो आपको लेखक कहा जाता था। जाहिर है, कुछ लोग कुछ चीजें लिख सकते थे, और पॉल एक वाक्य में अपना नाम लिख सकता था, लेकिन वह यहाँ केवल यह संकेत दे रहा है कि वह एक अंतिम नोट बना रहा है। पॉलिन के अन्य पत्रों के समापन को देखना और यह देखना मजेदार है कि वास्तव में उन्हें किसने लिखा था।

अगर आप कभी लोगों के साथ बाइबल किज़ करना चाहते हैं, तो सबसे मजेदार किज़ में से एक यह पूछना है कि रोमियों को किसने लिखा है। और यह बहुत स्पष्ट है क्योंकि रोमियों 16 में, टैटियस स्पष्ट रूप से कहता है, मैं टैटियस ने यह पत्र लिखा है, यह दर्शाता है कि वह वही है जिसने श्रुतलेख लिखा है। दुख की बात है कि हम नहीं जानते कि इस पत्र को किसने लिखा है, और मैं कहता हूँ कि यह थोड़ा दुखद है क्योंकि, फिर भी, जिसने भी इसे लिखा है, उसे गैलाटियन दर्शकों की तरह ही परीक्षण से गुजरना पड़ा।

ऐसा ज़रूर हुआ होगा कि पॉल इतना उत्तेजित था कि वह इतनी तेज़ी से जा रहा था कि वह व्यक्ति पूरा वाक्य नहीं लिख पाया। हमारे पास व्याकरण संबंधी विराम हैं। यह सिर्फ़ एक गड़बड़ है, यह पत्र, पॉल की उत्तेजित अवस्था को दर्शाता है।

वैसे भी, हमें पहली सदी के आरंभिक पत्र निर्माणों की एक छोटी सी झलक मिलती है। पद 12 में, पौलुस फिर से आंदोलनकारियों के विध्वंसक उद्देश्यों को इंगित करता है, जहाँ वह कहता है, मूल रूप से, ये मिशनरी यरूशलेम में अपने सहकर्मियों के लिए अच्छा दिखना चाहते हैं। जब वह कहता है, जो लोग शरीर में अच्छा प्रदर्शन करना चाहते हैं, वे आपको खतना करने के लिए मजबूर करने की कोशिश करते हैं, ताकि उन्हें मसीह के क्रूस के लिए सताया न जाए, जो उनके साथी यहूदियों के लिए होगा यदि वे वास्तव में मेरे साथ मिलकर परमेश्वर के इस एक नए बहु-जातीय लोगों का निर्माण करने के लिए काम कर रहे थे।

लेकिन ये यहूदी मिशनरी आपके शरीर में घमंड करना चाहते हैं, एक तरह से बहुसंयोजक तरीके से या कम से कम एक अस्पष्ट तरीके से, जिसका मतलब है कि उनका खतना, आप जानते हैं, चमड़ी, लेकिन यह भी कि उन्होंने पहचान का मूल्यांकन करने के इस शारीरिक तरीके के आधार पर उनके लिए एक नई पहचान कैसे बनाई है। इसलिए वे यरूशलेम वापस जाना चाहते हैं और यह कहने में सक्षम होना चाहते हैं कि हमने अभी-अभी इस पूर्व मूर्तिपूजक समुदाय को परिवर्तित किया है, यहाँ तक कि पॉल के वहाँ होने के बाद भी, हमने उन्हें एक उचित यहूदी समुदाय में परिवर्तित कर दिया है। लेकिन निश्चित रूप से, यह एक घमंड होगा, यह पुराने युग में एक घमंड होगा, यह वर्तमान बुरे युग की तरह पॉल की कल्पना में एक घमंड होगा।

यहाँ श्लोक 13 में दिलचस्प बात यह है कि पौलुस कहता है कि जो लोग खतना करवा चुके हैं, वे खुद भी कानून का पालन नहीं करते, क्योंकि पौलुस की धारणा के अनुसार, और यह रोमियों 2 से

मेल खाता है, कानून का श्रोता होने, यानी कोई ऐसा व्यक्ति जो सिर्फ़ यहूदी पहचान रखता हो, और कानून का पालन करने वाले होने में अंतर है। और पौलुस यहाँ संकेत कर रहा है कि ये लोग जो कानून का पालन करने का दावा करते हैं, वास्तव में कानून का पालन नहीं कर रहे हैं। पौलुस के दिमाग में, आप कानून का पालन करने वाले हो सकते हैं और कानून के नहीं हो सकते।

कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आप गैर-यहूदी हैं, ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी व्यक्ति हैं, तो यह कानून का पालन करना है, यह एक आज्ञाकारी व्यक्ति होना है। लेकिन आप कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकते हैं जो कानून का पालन करने वाला, कानून का सुनने वाला, कानून के काम करने वाला हो, और कानून का उल्लंघन करने वाला हो, जिसे वह इन लोगों को पद 13 में वर्गीकृत करता है। जो लोग खतना किए हुए हैं, वे खतना किए हुए हैं, लेकिन वे वास्तव में कानून के पालनकर्ता नहीं हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि आपका खतना किया जाए ताकि वे अपने शरीर में घमंड कर सकें, जिसे पौलुस कानून पालन की कमी मानता है।

दूसरी ओर, पॉल का दावा पूरी तरह से अलग है, और यह क्रूस पर चढ़ाए जाने की इस धारणा पर वापस आता है, जो जीवन के कई क्षेत्रों पर लागू होने वाली एक महत्वपूर्ण धारणा है। पॉल का दावा पूरी तरह से वैकल्पिक है, खासकर अगर आप पॉल के पिछले दावे के संदर्भ में सोचें, जिसकी झलक आपको फिलिप्पियों 3 में मिलती है - अपनी फरीसी पहचान पर दावा करना, अपनी यहूदी पहचान पर दावा करना, अपनी उपलब्धियों पर दावा करना, ईश्वर के प्रति अपने उत्साह पर दावा करना, जिसने उसे चर्च को सताने के लिए प्रेरित किया। पॉल के लिए, वह पहले ऐसा ही था।

अब, उसका घमंड बिलकुल अलग है। लेकिन ऐसा कभी न हो कि मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के अलावा किसी और बात पर घमंड करूँ, और यह शक्तिशाली है क्योंकि क्रूस ने उसके साथ जो किया है, उसके माध्यम से, दुनिया मेरे लिए क्रूस पर चढ़ गई है, और मैं दुनिया के लिए। इसलिए, पौलुस क्रूस पर घमंड करना जारी रखेगा, जो कि पूर्ण शर्म का प्रतीक है।

यह शाही मृत्युदंड का प्रतीक है। यह नुकसान का प्रतीक है। यह कमज़ोरी का प्रतीक है।

यह प्रभुत्व का प्रतीक है। यह निंदा का प्रतीक है। यह परमेश्वर द्वारा शापित होने का प्रतीक है, और पौलुस इन सभी को स्वीकार करता है क्योंकि यही वह साधन था जिसके माध्यम से नई सृष्टि का निर्माण किया गया था, और यही वह साधन है जिसके द्वारा पौलुस को इस पुरानी दुनिया से नई दुनिया में लाया गया।

और इसलिए पौलुस खुशी-खुशी इसका प्रचार करेगा क्योंकि इसने उसे आज़ाद कर दिया है, और इसने उसे मसीह के पुनरुत्थान की शक्ति का अनुभव करने में आज़ाद कर दिया है। इसने उसे मसीह में अपने साथी विश्वासियों के साथ जोड़ दिया है, और इसने उसे एक जीवन देने वाली वास्तविकता में ला दिया है, जो उसे अंतिम पुनरुत्थान और नई सृष्टि में अंतिम भागीदारी की ओर ले जाता है जब परमेश्वर के राज्य की पूर्णता आती है। पहले, उसके सभी पिछले घमंड ने उसे अंत में केवल निंदा की गारंटी दी थी।

वे केवल उसके विनाश की गारंटी दे रहे थे, और वे केवल उसे पुनरुत्थान जीवन के वर्तमान अनुभव से अलग होने की गारंटी दे रहे थे। इसलिए, क्रूस परम आशाजनक वास्तविकता है, भले ही शरीर की आँखों के लिए, यह केवल दर्द, बेचैनी, शर्म, कमजोरी, अपमान आदि का प्रतीक है। लेकिन यह क्रूस का विरोधाभास है, और यह विरोधाभास और पॉलिन धर्मशास्त्र का आश्चर्य है।

मैं क्रूस के जितना करीब होता हूँ, मैं पुनरुत्थान की शक्ति के उतना ही करीब होता हूँ। जितना अधिक मैं खुद को दर्द, अपमान और पीड़ा से दूर रखने की कोशिश करता हूँ, उतना ही अधिक मेरे लिए मसीह के पुनरुत्थान की शक्ति का अनुभव करना असंभव होता है। इसलिए, पॉल के लिए, क्रूस उसका घमंड है, और यही उसके पुराने संसार में क्रूस पर चढ़ने और नए संसार में जीवित रहने का साधन है।

इसलिए, खतना के लिए, न तो खतना कुछ है और न ही खतना रहित होना बल्कि एक नई सृष्टि है। फिर से, यह पौलुस के उस मौलिक विश्वास पर वापस आता है जो उसके जीवन को नई सृष्टि के लिए उन्मुख करता है। ये सभी पुराने भेद समाप्त हो गए हैं।

लिंग, जातीयता, ये सब खत्म हो गया है। अब ये हमारी कीमत निर्धारित नहीं करता। अब, हम पुनरुत्थान जीवन के इस नए संदर्भ में जो हम हैं उसका वास्तव में आनंद लेने के लिए स्वतंत्र हैं।

इस बारे में दिलचस्प बात यह है कि यह सिर्फ एक समापन शिष्टता नहीं है। हम इसे 5:16 में वर्णित देखते हैं। क्षमा करें, 5:6। क्योंकि हम, आत्मा के द्वारा विश्वास के द्वारा, उस... का इंतज़ार कर रहे हैं। मुझे खेद है। मैं यह गलत समझ रहा हूँ।

ओह, माफ़ करें। यह 5:6 है। क्योंकि मसीह यीशु में, न तो खतना और न ही खतना रहित होना कुछ भी मायने रखता है, बल्कि प्रेम के माध्यम से काम करने वाला विश्वास है, जिसे 6:15 में दोहराया गया है। क्योंकि न तो खतना कुछ है और न ही खतना रहित होना कुछ भी है, बल्कि एक नई सृष्टि है। दिलचस्प बात यह है कि पौलुस निम्नलिखित आयत में क्या कहता है: जो लोग इस नियम से चलेंगे, उन पर शांति और दया होगी।

इसलिए, वह इसे एक कैनन, एक नियम, कैनन कहते हैं। यह नियम है। यह इस तरह का है... आप नए कानून के बारे में बात करना चाहते हैं।

यह नया कानून यही है। आपकी जातीय पहचान, यह पूरी पुरानी दुनिया, अब मायने नहीं रखती। जो मायने रखता है वह है नई रचना में भागीदारी।

जो बात मायने रखती है वह है विश्वास का प्रेम में काम करना। यही नियम है। फिर से, यही कारण है कि, जब पादरी सेवा की बात आती है, तो हमें पूरी तरह से आग्रह करना चाहिए कि हमारी संगति में हर कोई आत्म-बलिदान प्रेम, आत्म-समर्पण और सेवा के जीवन के माध्यम से पूरी तरह से और फलदायी रूप से भाग ले रहा है।

और जहाँ विभाजन की प्रवृत्ति है, जहाँ गुटबाजी या मतभेद की प्रवृत्ति है या हमारे चर्चों में उपसमूहों में विभक्ति है जो असंतोष, संतोष की कमी को बढ़ावा देती है, वे चर्च में केवल

दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम नहीं हैं। वे घातक घटनाक्रम हैं। वे नए सृजन जीवन के लिए घातक खतरे हैं।

फिर से, हम आम तौर पर पापों को इस आधार पर वर्गीकृत करते हैं कि कौन सा सबसे अधिक रेडियोधर्मी है, और यह खतरे की घंटी बजाता है। ये वे हैं जहाँ हम चर्च अनुशासन शुरू करेंगे, लेकिन मुझे लगता है कि यह चर्च की प्राथमिकता और एकता की महत्वपूर्णता की समझ की कमी को दर्शाता है। यही नियम है।

नई सृष्टि, प्रेम में विश्वास का काम करना। और अंत में, यह नोट जहाँ पौलुस कहता है, शांति और दया उन लोगों पर हो, लेकिन परमेश्वर के इस्राएल पर भी हो। और इस कथन ने बहस को अंतहीन बना दिया है, खासकर उन लोगों के बीच जो यह समझने की कोशिश करते हैं कि पुराने नियम के परमेश्वर के लोग कौन हैं और नए नियम के परमेश्वर के लोग कौन हैं।

एक बार जब हम इन सभी धार्मिक बहसों से दूर हो जाते हैं, तो मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि पॉल वास्तव में ईश्वर के इस्राएल के बारे में बात कर रहे हैं। पॉल सिर्फ़ गैर-यहूदियों के बारे में बात नहीं करेंगे। वह अब चर्च द्वारा इस्राएल की भूमिका निभाने की बात नहीं कर रहे हैं।

मुझे लगता है कि इस तथ्य से बचने का कोई रास्ता नहीं है कि वह यरूशलेम चर्च के बारे में बात कर रहे हैं। वह यहूदी ईसाइयों के बारे में बात कर रहे हैं जिन्होंने वास्तव में ईश्वर के लोगों में अपनी भूमिका को अन्य गैर-यहूदी ईसाइयों के साथ स्वीकार किया है। उन लोगों को ईश्वर का इस्राएल कहा जाता है।

जो गैर-यहूदी लोग विश्वास में हैं वे ईसाई, तुर्की ईसाई, सीरियाई ईसाई, रोमन ईसाई या मिस्र के ईसाई हैं। लेकिन यहूदी ईसाई होना ईश्वर के ऐतिहासिक लोगों का हिस्सा होना है, लेकिन ईश्वर के ऐतिहासिक लोगों पर वास्तव में ईश्वर और वे लोग दावा करते हैं जो मसीह का दावा करते हैं। यहाँ गलातियों के कुछ अंतिम समापन नोट दिए गए हैं।

पौलुस अब से प्रार्थना करता है, कोई भी मुझे परेशान न करे, क्योंकि मैं अपने शरीर पर यीशु के दागों को धारण करता हूँ। वे यह जानते हैं। वे यह इसलिए जानते हैं क्योंकि जब वह वहाँ था, तो वह मसीह की मृत्यु का सार्वजनिक प्रदर्शन था।

आप जानते हैं, वे जानते हैं कि उसके शरीर पर मसीह के निशान हैं। यह इस पत्र का एक मज़ेदार अंत है। जैसे यह अचानक शुरू हुआ था, वैसे ही यह अचानक समाप्त भी हो गया।

हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ है, भाइयो। आमीन। पत्र किसने लिखा है, इसका कोई उल्लेख नहीं है।

इसमें इस बात की कोई प्रशंसा नहीं है कि इसे कौन ले जा रहा है, जो इफिसियों और कुलुस्सियों से अलग है। फिलेमोन की तरह इसमें समापन अभिवादन नहीं है, यहाँ तक कि समापन अभिवादन के कई पद भी हैं। रोमियों 16 समापन अभिवादन का एक अध्याय है।

तो एक अर्थ में यह पत्र एक प्रेरित द्वारा लिखा गया था जो बहुत परेशान है, बहुत परेशान है कि उसके कई चर्च जहां उसने नई सृष्टि के जीवन को जन्म लेते देखा है, वर्तमान बुरे युग की गतिशीलता और आयामों से पीछे हट रहे हैं और संभावित विनाश का सामना कर रहे हैं, जो एक पूर्ण त्रासदी होगी। खैर, ईसाई पहचान और पॉलिन धर्मशास्त्र के लिए गैलाटियन को पॉल के पत्र से कुछ अंतिम सबक यहां दिए गए हैं। सबसे पहले, जैसा कि बहुत से लोग अब पहचान रहे हैं, और मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ, पॉल और यहूदी धर्म के संबंध में, पॉल यहूदी है, पूरी तरह से यहूदी है, यहूदी होने के लिए कोई माफी नहीं मांगता है, और अपने धर्मशास्त्र के संबंध में, यहूदी धर्म के साथ कोई समस्या नहीं है।

वास्तव में, मुझे लगता है कि गलातियों 1 में, यहूदी धर्म का उनका उल्लेख उस तरह के मैकाबीन यहूदी धर्म से संबंधित है जो यहूदी लोगों के भीतर एक उपसमूह है जो यहूदी लोगों की शुद्धता का अनुसरण कर रहे हैं। यहूदी धर्म के बारे में उनका वास्तव में कोई दृष्टिकोण नहीं है, जिसे हम उनके पत्रों में देख सकते हैं। पॉल के विचार में, लोगों के दो समूह हैं।

ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के आज्ञाकारी हैं, चाहे वे गैर-यहूदी हों या यहूदी, और ऐसे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं। यही उसका भेद है। ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के नए सृजन लोगों में से हैं, यहूदी या गैर-यहूदी, और ऐसे लोग हैं जो बाहर हैं जिन्हें वह परमेश्वर के नए सृजन लोगों में लाना चाहता है।

जब पॉल के लिए कानून का पालन करने की बात आती है क्योंकि वह पुराने नियम और नए नियम के बीच कोई अंतर नहीं देखता है, तो पॉल को पता नहीं था कि नया नियम होने वाला है। उसके लिए, बाइबल सिर्फ पुराना नियम था। कानून का पालन करना, उद्धरण-अनउद्धरण, बस भगवान की आज्ञा का पालन करने से संबंधित है, जो शास्त्र कहता है उसे करना।

यहूदियों के लिए कानून का पालन करना यहूदी बने रहना और इस बात का पालन करना है कि इस्राएल के लोगों के बीच वफादार होना कैसा लगता है। एक गैर-यहूदी ईसाई के लिए कानून का पालन करने का मतलब था मसीह के प्रति आज्ञाकारी होना, यीशु के प्रति आज्ञाकारी होना, यीशु में विश्वास करना, परमेश्वर के नए सृजन लोगों के बीच फलदायी रूप से भाग लेना और इस्राएल के परमेश्वर को जानना, लेकिन मूसा के कानून के इस्राएली-विशिष्ट घटकों को न अपनाना। मुझे पता है कि यह जटिल है, लेकिन इस्राएल के परमेश्वर से संबंध बनाने के लिए, इस्राएल के शास्त्रों के अलावा उसे जानने का कोई और तरीका नहीं है।

तो ये चर्च के लिए शास्त्र हैं, लेकिन वे यहूदियों के लिए जिस तरह से राष्ट्रीय चार्टर की भूमिका निभाते हैं, वैसा नहीं करते। इस अंतर को ध्यान में रखना होगा। लेकिन आप एक गैर-यहूदी के रूप में भी कानून का पालन करने वाले हो सकते हैं, जबकि पॉल के दिमाग में भी, कुछ यहूदी गैर-कानूनी होंगे क्योंकि वे कानून के अनुसार काम नहीं कर रहे हैं, भले ही उनके दिमाग में उन्हें ऐसा लगता हो।

जब समकालीन अनुप्रयोग के बारे में सोचने की बात आती है, तो मुझे लगता है कि हमें किसी भी संस्कृति में बहुत जागरूक होना चाहिए जहाँ आप गलातियों को पढ़ रहे हैं, कोई भी संस्कृति। मेरे लिए, मैं एक अमेरिकी ईसाई हूँ, और मुझे लगता है कि अमेरिकी चर्च पर उन सभी

जनजातीयताओं को पहचानने का दायित्व है जो हमारी संस्कृति, राजनीतिक, संप्रदाय और क्षेत्रीय को प्रभावित करती हैं। क्या आप पूर्व से हैं या पश्चिम से? क्या आप उत्तर से हैं या दक्षिण से? क्या आप रिपब्लिकन या डेमोक्रेटिक, रूढ़िवादी या उदारवादी हैं? आप चाहे किसी भी तरह के विचारधारा या संप्रदाय या राजनीतिक दल से जुड़े हों, मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति में इन भेदों को पहचानना, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि वे लोगों को एक-दूसरे के खिलाफ कैसे खड़ा कर रहे हैं, और भले ही हमारी वफ़ादारी या समानताएँ हों, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि अमेरिकी ईसाई होने के नाते, हम इन चीज़ों को दुश्मनी या संघर्ष का स्थल न बनने दें।

मुझे यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि एक अमेरिकी होने के नाते भी, यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे मैं अन्य देशों के लोगों के मुकाबले अपनी मौलिक पहचान के रूप में रखता हूँ। मैं एक ईसाई हूँ। मैं एक बिल्कुल नए लोगों का हिस्सा हूँ जहाँ मैं अन्य ईसाइयों से ज्यादा घनिष्ठता और गहनता से जुड़ा हुआ हूँ, जितना कि मैं अन्य अमेरिकियों से नहीं हूँ, भले ही मैं अमेरिकी होने के सबसे अच्छे हिस्सों का आनंद ले सकता हूँ, जो मैं करता हूँ।

मुझे कैलेंडर पसंद है। मुझे हमारे खेल पसंद हैं। मुझे अमेरिकी होने का मतलब बहुत पसंद है क्योंकि मुझे लगता है कि अमेरिकी होना ईश्वर के लोगों के बीच जाना संभव है, लेकिन मुझे यह भी समझना होगा कि यह वास्तव में कितना जटिल है।

मैं मसीह में परमेश्वर के परिवार में शामिल होने वाले व्यक्ति के रूप में अपनी मौलिक पहचान पर कैसे ध्यान केंद्रित करूँ और अपनी अन्य पहचानों को इस बात में कम भूमिका निभाने दूँ कि मैं दूसरे लोगों के साथ कैसे जुड़ूँ, मैं दुनिया को कैसे देखता हूँ और मैं दूसरे लोगों को कैसे देखता हूँ? यह हमेशा एक जटिल वास्तविकता होगी, लेकिन पॉल की तरह, मेरी पहचान क्रूस में है। मेरे चर्च की पहचान क्रूस में है, और यह ऐसी चीज़ है जिसने मुझे किसी भी चीज़ से कहीं अधिक आकार दिया है। और अंत में, मैं आपको पॉल के सर्वनाशकारी दर्शन की फलदायीता के लिए बधाई देना चाहूँगा।

यानी, पॉल किस तरह से चर्च को ब्रह्मांडीय क्षेत्र संघर्ष के स्थान पर युगों के क्रॉसओवर के बीच स्थित देखता है और यह कैसे है कि मैं व्यक्तिगत दृष्टिकोण और व्यवहार का विश्लेषण कर सकता हूँ। मैं अन्य लोगों के संबंध में अपनी स्थिति के बारे में सोच सकता हूँ। मैं रिशतों और सामुदायिक गतिशीलता का विश्लेषण कर सकता हूँ क्योंकि वे शरीर से प्रभावित हो रहे हैं।

मैं समुदाय की गतिशीलता का विश्लेषण कर सकता हूँ कि कैसे परमेश्वर समुदायों को आशीर्वाद देना चाहता है और पुनरुत्थान जीवन के अनुसार समुदायों को आकार देना चाहता है, जो हमेशा क्रॉस द्वारा उन्मुख होने वाला है। यह मेरे लिए पॉलिन धर्मशास्त्र के माध्यम से सोचने का एक लेंस बन गया है, लेकिन यह मेरे लिए पादरी स्थितियों के बारे में सोचने, रिशतों के बारे में सोचने का एक लेंस भी बन गया है, और मुझे पता है कि यह बहुत से अन्य लोगों के लिए फलदायी रहा है। खैर, मुझे उम्मीद है कि गलातियों का यह अध्ययन आपके लिए जीवनदायी रहा होगा।

मैं आपको इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ, इसे ध्यान से पढ़ें, इसे अच्छी तरह से पढ़ें और इसका आनंद लें। मुझे उम्मीद है कि यह आपके लिए ईश्वर की जीवन देने वाली शक्ति का स्रोत

बन जाएगा।

यह डॉ. टिम गोम्बिस द्वारा गलातियों की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 8, गलातियों 6:1-18 है।